

गीता में मानवता

डॉ. प्रवीण पाठक
असिस्टेंट प्रोफेसर
इतिहास विभाग
स्टारेक्स यूनिवर्सिटी, गुरुग्राम

सारांश

श्रीमद्भागवत गीता यह एक ग्रंथ ही नहीं अपितु अपने आप में जीवनपुंज है। जीवनपुंज अर्थात् जीवन को प्रकाशित करने का एक व्यवस्थित स्रोत हैं। आज की व्यावहारिक जीवनशैली में जो भाव, जो उद्देश्य चाहिए वो सम्पूर्ण रूप से इस ग्रंथ में परिभाषित है। व्यक्ति की कार्य को लेकर एवं कार्य को निर्धारित करने वाली हर वो प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष परिस्थिति की परिभाषा एवं उद्देश्य इसमें पाया जा सकता है। कर्म, धर्म में निहित है या धर्म, कर्म में निहित है इन विरोधाभासों को भी गीता हल करती है। कथा-प्रवचनों से लेकर घर-घर तक जीवन-सुधार परक उपदेश, नीति-नियमों का जो भी ज्ञान दिया जाता है, उसमें गीता का प्रकाश कहीं न कहीं अवश्य पड़ता है। महाभारत से पूर्व शंका एवं त्रुटियों से भरा अर्जुन कैसे अपने कर्म और धर्म के भेद को समझ पाये। इसी परिलक्ष्य में श्रीकृष्ण द्वारा स्वरचित और कंठित इस 18 अध्याय वाली महागीत को गीता के रूप में हम सभी नमन करते हैं। आज मानव स्वयं से लड़ रहा है और सही-गलत, अच्छा-बुरा भेद कर पाना दुर्गम है क्योंकि आज कोई भी चरित्र किस पाले में आता है इसका निर्णय करना अत्यंत कठिन है गीता, महाभारत की परिस्थिति में ही नहीं बल्कि आज की परिस्थिति में भी बहुत उपयोगी है। आज हम सभी उस अर्जुन की तरह जीवन रूपी महाभारत के समक्ष हैं परंतु आज श्री कृष्ण अपने रूप में भले ही न हों परंतु स्वर और ज्ञान स्रोत हमारे पास उपलब्ध हैं। दूसरे अध्याय की कर्म परिभाषा से लेकर मोक्षप्राप्ति के मार्गों का विश्लेषण करने वाले अंतिम अध्याय तक, गीता जीवन के हर पहलू को स्पर्श करती है। हम आज जिन आसक्तियों से घिरे हैं मोह, बंधन, विलास, भोग, पाखंड, ईर्ष्या, लोभ, इनके प्रमुख हैं और गीता के छठे, चौदहवें एवं सोलहवें अध्याय इतनी बारीकी से इसपर अध्ययन करते हैं कि कोई गूढ़ विचारक भी पढ़ने पर आश्चर्यचकित एवं अभिभूत हो जाये।

विशेषकर कई पश्चिमी एवं गैर भारतीय चिंतक जो गीता से अनभिज्ञ हैं वो जब गीता का पाठ करते हैं तब उनकी वैचारिक सुंदरता और भी बढ़ जाती है।

मुख्य शब्द- गीता, मानवता, श्रीकृष्ण, कर्मयोग, महाभारत

प्रस्तावना

भगवद् गीता दिव्य ज्ञान का एक शाश्वत गीत मानवता ने सहस्राब्दियों से जिन पवित्र ग्रंथों और शास्त्रों के विशाल सागर को संजोकर रखा है, उसमें भगवद् गीता एक प्रकाशस्तंभ की तरह चमकती है श्रीमद् भगवद् गीता मानवता के लिए दिव्य ज्ञान का अमूल्य उपहार है। कर्मयोग, ज्ञानयोग एवं भक्तियोग का समन्वित संदेश प्रदान करने करते हैं भगवद् गीता का मानवता को दिया गया। उपहार सही कर्म के चरण-दर-चरण निर्देश हैं, कर्म योग का अद्वितीय खाका है, जो व्यक्तिगत पूर्णता और सामूहिक समृद्धि की ओर ले जाएगा। मानवता को बचाने व इसका मार्गदर्शन करता है। इसलिए हर व्यक्ति को गीता ज्ञान प्राप्त कर मानवता के उत्थान में अपना योगदान देना चाहिए। गीता का मूल संदेश युद्ध में संयम का भाव बनाए रखना है। यह सुझाव देती है कि संयम की भावना योद्धा के भीतर समाहित हो जानी चाहिए ताकि अराजकता की स्थिति में वह अपनी इच्छाओं के बहकावे में न आ जाए, गीता का एक प्रमुख संदेश है "कर्म किए जाओ, फल की चिंता मत करो।" इसका अर्थ है कि हमें अपने कार्यों में लगे रहना चाहिए और उनके परिणामों की चिंता नहीं करनी चाहिए। गीता मनुष्य को जीने की कला सिखाती है। गीता का अर्जुन केवल पाण्डुपुत्र अर्जुन नहीं है अपितु यह अर्जुन सारी मानवता का प्रतिनिधि है। भगवद् गीता एक आध्यात्मिक मार्गदर्शक है जो व्यक्तियों को योग, ध्यान और भक्ति के अभ्यास के माध्यम से एक पूर्ण जीवन जीने का तरीका सिखाती है। श्रीमद्भागवत गीता यह एक ग्रंथ ही नहीं अपितु अपने आप में जीवनपुंज है। जीवनपुंज अर्थात् जीवन को प्रकाशित करने का एक व्यवस्थित स्रोत। आज की व्यावहारिक जीवनशैली में जो भाव, जो उद्देश्य चाहिए वो सम्पूर्ण रूप से इस ग्रंथ में परिभाषित है। व्यक्ति की कार्य को लेकर एवं कार्य को निर्धारित करने वाली हर वो प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष परिस्थिति की परिभाषा एवं उद्देश्य इसमें पाया जा सकता है। कर्म, धर्म में निहित है या धर्म, कर्म में निहित है इन विरोधाभासों को भी गीता हल करती है। कथा- प्रवचनों से लेकर घर-घर तक जीवन-सुधार परक उपदेश, नीति-नियमों का जो भी ज्ञान दिया जाता है, उसमें गीता का प्रकाश कहीं न कहीं अवश्य पड़ता है। महाभारत से पूर्व शंका एवं त्रुटियों से भरा अर्जुन कैसे अपने कर्म और धर्म के भेद को समझ पाये। इसी परिलक्ष्य में श्रीकृष्ण



द्वारा स्वरचित और कंठित इस 18 अध्याय वाली महागीत को गीता के रूप में हम सभी नमन करते हैं। समय का खेल देखिये, सतयुग में दो लोकों में युद्ध होता है, त्रेता में दो साम्राज्यों के प्राणी राम-अयोध्या , रावण-लंका में युद्ध होता है। द्वापर में दो परिवार युद्ध करते हैं। युगों के साथ ही युद्ध करने वालों की आसन्नता या निकटता देखी जा सकती है। आज मानव स्वयं से लड़ रहा है और सही-गलत, अच्छा-बुरा भेद कर पाना दुर्गम है क्योंकि आज कोई भी चरित्र किस पाले में आता है इसका निर्णय करना अत्यंत कठिन है । गीता, महाभारत की परिस्थिति में ही नहीं बल्कि आज की परिस्थिति में भी बहुत उपयोगी है। आज हम सभी उस अर्जुन की तरह जीवन रूपी महाभारत के समक्ष हैं परंतु आज श्री कृष्ण अपने रूप में भले ही न हों परंतु स्वर और ज्ञान स्रोत हमारे पास उपलब्ध हैं दूसरे अध्याय की कर्म परिभाषा से लेकर मोक्षप्राप्ति के मार्गों का विश्लेषण करने वाले अंतिम अध्याय तक , गीता जीवन के हर पहलू को स्पर्श करती है। हम आज जिन आसक्तियों से घिरे हैं मोह, बंधन, विलास, भोग, पाखंड, ईर्ष्या, लोभ, इनके प्रमुख हैं और गीता के छठे, चौदहवें एवं सोलहवें अध्याय इतनी बारीकी से इसपर अध्ययन करते हैं कि कोई गूढ़ विचारक भी पढ़ने पर आश्चर्यचकित एवं अभिभूत हो जाये। विशेषकर कई पश्चिमी एवं गैर भारतीय चिंतक जो गीता से अनभिज्ञ हैं।

गीता के अनुसार जो मनुष्य निरंतर आत्मभाव में स्थित सुख-दुख को समान समझे , मिट्टी-पत्थर-स्वर्ण में अंतर न करे, ज्ञान, प्रिय तथा अप्रिय को एक सा माने और अपनी निंदा हो या स्तुति उसमें भी समान भाव रखे , जो मान-अपमान में सम रहे, मित्र-गैर मित्र में भी सम है और अभिमान रहित है वह ईश्वर को अतिशय प्रिय है। ऐसे झकझोरने वाले प्रामाणिक सत्य हमें आज के जीवन में संतुलन का पाठ पढ़ाते हैं।' गीता पढ़ते ही पता चला कि कर्म प्रकृति का मूल है। संसार का कोई भी जीव बिना कर्म के अस्तित्व हीन है। कर्म से कोई आलसी भी छुटकारा नहीं पा सकता। कर्म इतना मूल है कि खुद ईश्वर भी स्वयं को कर्म से भिन्न नहीं कर सकते। कर्म का सूत्र न केवल जीवित पर अपितु निर्जीव पे भी सर्वथा अनिवार्य है। पंचतत्व(अग्नि, जल, वायु, भू, आकाश) का कर्मयोग एवं प्रकृति का दोहन करने वाले का कर्मयोग, जब दोनों एक दूसरे को संतुलित रखते हैं भगवान श्री कृष्ण आत्मा और जीव के बीच अद्भुत अंतर बतलाते हैं जिससे आज का कोई भी अंतरिक्ष वैज्ञानिक से नकार नहीं सकता। वस्तुतः आत्मा कुछ नहीं शक्ति है ऊर्जा है जिससे सारा ब्रह्माण्ड संचालित होता है और सभी द्रव्यों और पदार्थों का मूल है। मनुष्य एवं सभी प्राणी उसी शक्ति का अंश हैं। मनुष्य हो या कोई भी प्राणी, प्राण नष्ट होने पर आत्मा नष्ट हो ही नहीं सकती चाहे वो भूमि में जाये, अग्नि में या जल में, उसका केवल स्थानांतरण होता है केवल।



वैज्ञानिक प्रमाणिकता की बात करे तो ऊर्जा को द्रव्य में या द्रव्य को ऊर्जा में परिवर्तित कर सकते हैं। जैसे ऊर्जा न तो पैदा होती है ना मरती है बस रूप बदल लेती है उसी प्रकार गीता में भी आत्माको ऐसा बताया गया है। हमने गीता के उस पहलू को भी शायद कभी नहीं जाँचा जिसमें ईश्वर के स्वरूप की विस्तारपूर्वक जानकारी दी गयी है, वह भी स्वयं ईश्वर के द्वारा। ईश्वर को शक्ति मानकर उन्होंने कहा है कि मैं सबमें हूँ, सभी विनाश होने पर मुझमें ही आ मिलते हैं।

गीता के वैचारिक मंथन को हम गहरायी से अध्ययन करें तो वर्तमान विज्ञान और गीता के कई मूल्यों में सापेक्षता का मिलना विलक्षण है। व्यक्तियों के अंदर पाये जाने वाले जो दुर्गुण गीता ने अपने सोलहवें अध्याय में व्यक्त किये हैं उनका आज स्वरूप विस्तृत हो गया है। महाभारत में पांडव केवल पाँच भाई नहीं अपितु पाँच इन्द्रियाँ हैं और कौरव उनका ध्यान खींचने वाले सौ कारण। आज का युद्ध हमारी इन्द्रियों और उनका ध्यान भटकाने वाले कारणों के बीच है। आज के युग में कर्ण का चरित्र हमारी महत्वकांक्षाओं को दर्शाता है जिसका अंत किये बिना हम युद्ध नहीं जीत सकते। परमात्मा तक पहुंचने के लिए एक विरक्त कर्मयोगी बनना पड़ता है। जैसे कमल कीचड़ में रहकर खिलता है भगवान वासुदेव कहते हैं कर्म फल का हेतु मत हो तथा कर्म न करने का तेरी आसक्ति न हो। कर्म का तात्पर्य अर्थात् दृष्टिकोण को ज़रूर ध्यान रखना है। यहां बहुत महीन अंतर है, फल की चिंता न करना और कर्म का तात्पर्य (कारण) दोनों एक ही लगती है पर इनमें गहरा अंतर्विरोध है। कर्म का तात्पर्य न होने से कर्म करने की इच्छा और शक्ति क्षीण हो जाती है। अर्जुन को धर्म की स्थापना करनी है ये उसके कर्म का तात्पर्य है। अर्जुन को धर्मस्थापन के बाद युद्ध-विध्वंस, भातृहत्या, गुरुहत्या इत्यादि का पाप लगे या युधिष्ठिर राजा बने यह है कर्म का फल। अर्जुन अपने कर्म फल को लेकर शंका और दुविधा में है परन्तु श्री कृष्ण उसे कर्म का तात्पर्य का मर्म समझाते हैं। वस्तुतः एक अत्यन्त महत्वपूर्ण दीक्षा है। ज्ञान प्राप्ति का यह सुख गीता को पढ़ने के कर्म का तात्पर्य है और अगर मैं जीवन में कुछ श्रेष्ठ कर पायी तो ये मेरे गीता को पढ़ने के कर्म का फल होगा। गीता मेरे ही नहीं बल्कि समस्त संसार के लिए ब्रह्मज्ञान जैसा है। गीता जीवन संचालन और संतुलन का एक अद्भुत साधन है। हम सभी को इसका अध्ययन आत्मशांति और मोहमुक्ति के लिए जीवन पर्यन्त करते रहना चाहिए। गीता हमारे जीवन में आई हुई इन सब रूढ़ियों को मिटाकर हमें सत्य की ओर, धर्म की ओर, मानवता की ओर अग्रसर करती है। राष्ट्र की वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए एकमात्र गीता ही वह विकल्प है जो देश को पुनः उन्नति के पथ पर ले जाती है। गीता में यह बताया गया है कि कैसे एक व्यक्ति अपने जीवन में मानवता के सिद्धांतों को



अपनाकर समाज में शांति, सद्भाव और विकास ला सकता है। ग्राम गीता में मानवता की शिक्षा का मूल आधार है सेवा और त्याग। गीता के श्लोकों में मानवता का हर मर्म समाहित है, जो सदैव कर्म पथ पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है। अपने धर्म और कर्तव्यों का पालन करना ही एक व्यक्ति को वास्तविक सौंदर्य प्रदान करता है। अर्थात् जो व्यक्ति अपने कर्तव्यों और धर्म को जानता है और उसका पूर्ण रूप से पालन करता है, वही सर्वश्रेष्ठ है।

निष्कर्ष

सुख-दुःख, जय-पराजय, मित्र-शत्रु, और मान-अपमान में समान रहना। मानवता का अर्थ हर प्राणी में परमात्मा का दर्शन करना है। गीता मानवता को स्वार्थी जीवन से उठाकर निस्वार्थ सेवा, कर्तव्यपरायणता और सार्वभौमिक प्रेम के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करती है। भगवद् गीता का मानवता को दिया गया उपहार सही कर्म के चरण-दर-चरण निर्देश हैं, कर्म योग का अद्वितीय खाका है, जो व्यक्तिगत पूर्णता और सामूहिक समृद्धि की ओर ले जाएगा गीता एक शक्तिशाली और ज्ञानवर्धक ग्रंथ है। जब आप कमजोर होते हैं, तो यह आपको शक्ति प्रदान करती है, और जब आप निराश और दुर्बल होते हैं, तो यह आपको प्रेरित करती है। गीता के अनुसार, सामान्य मनुष्य की चेतना का लक्ष्य आत्मा का परमात्मा से मिलन है, जो कि मोक्ष या मुक्ति की प्राप्ति के रूप में जाना जाता ।



संदर्भ सूची-

1. Arthur Llewellyn Basham (1991). *The Origins and Development of Classical Hinduism*. Oxford University Press.
2. Heather Elgood (2000). *Hinduism and the Religious Arts*. A & C Black.
3. Slavitt (2015). *The Mahabharata*. Northwestern University Press.
4. Franklin Edgerton (1952). *Bhagavad Gita, Part 2*. Harvard University Press.
5. Gavin Flood; Charles Martin (2013). *The Bhagavad Gita: A New Translation*. W. W. Norton & Company.
6. Kriyananda, Goswami (1994). *Bhagavad Gita (3rd ed.)*. Chicago,
7. Arthur Llewellyn Basham (1991). *The Origins and Development of Classical Hinduism*. Oxford University Press.
8. Franklin Edgerton (1952). *Bhagavad Gita, Part 2*. Harvard University Press. p.
9. Gavin Flood; Charles Martin (2013). *The Bhagavad Gita: A New Translation*. W. W. Norton & Company.
10. W. J. Johnson (2004). *Bhagavad Gita*. Oxford University Press.
11. Stephen Phillips (2009). *Yoga, Karma, and Rebirth: A Brief History and Philosophy*
12. Dharma Passionate (2011). *Spirituality and Indian Psychology: Lessons from the Bhagavad-Gita*
13. McDermott, Robert A. (1975). "Indian Spirituality in the West: A Bibliographical Mapping". *Philosophy East and West*
14. Jonardon Ganeri (2007). *The Hidden Art of the Soul: Theories of Self and Practices of Truth in Indian Ethics and Epistemology*
15. Eknath Easwaran (2011). *The Essence of the Bhagavad Gita: A Contemporary Guide to Yoga, Meditation, and Indian Philosophy*
16. Trevor Leggett (1995). *Attainment of the Supreme Soul: Bhagavad Gita Yoga*
17. Stephen H. Phillips (2009). *Yoga, Karma and Reincarnation: A Brief History and Philosophy*
18. Juan Mascaro (1962). *Bhagwat Geeta*. Penguin.
19. Abhinavagupta (Rajaank) (1983). *Geethartha collection*. Translated by Arvind Sharma. Brill Academic.
20. Gurumaa, Anandamurthy (24 November 2021). *Srimad Bhagavad Gita: (Brief Commentary)*
21. Engels, Jeremy David (2021). *The Ethics of Unity: Emerson, Whitman and the Bhagavad Gita*
22. VR Narla (2010), *The Truth about the Gita*, Prometheus Books

